केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :46 अंक 264 बुधवार 23 अप्रैल 2025 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

लेखपाल 22 हजार रुपए की रिश्वत लेते गिरफ्तार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। कलेक्ट्रेट परिसर स्थित भूलेख कार्यालय में एंटी करप्शन टीम ने मंगलवार को लेखपाल अभिनव ओझा को 22 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा। यह कार्रवाई एक शिकायत के आधार पर की गई। एक व्यक्ति रत्न ने एंटी करप्शन कार्यालय में शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि लेखपाल ने चिकित्सा प्रतिपूर्ति से जुड़े काम के लिए रिश्वत की मांग की थी। लेखपाल अभिनव ओझा को हाल ही में भानपुर तहसील से भूलेख कार्यालय में अटैच किया गया था। एंटी करप्शन टीम ने कई दिनों की निगरानी के बाद यह कार्रवाई की। टीम आरोपी को बस्ती कोतवाली ले गई है, जहां पूछताछ चल रही है।

इस घटना की जानकारी मिलते ही कर्मचारी संघ के अध्यक्ष और अन्य कर्मचारी कोतवाली पहुंच गए। इस कार्रवाई से कलेक्ट्रेट परिसर में हलचल मच गई है।

पृथ्वी दिवस पर चित्रकला, निबंध, वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। पृथ्वी दिवस के अवसर पर आदर्श नगर पंचायत भानपुर द्वारा प्राथमिक विद्यालय बनवधिया में जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया । इसमें स्कूल के बच्चों को स्वच्छता, पौधरोपण ,जलवायु परिवर्तन के बारे में बताया गया । अपर जिला अधिकारी प्रतिपाल चौहान, अधिशासी अधिकारी ऋचा सिंह के दिशा निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम में पर्यावरण , स्वच्छता पर चित्रकला, निबंध,वाद विवाद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट कार्य करने वाले बच्चों को सम्मानित किया गया ।

विश्व पृथ्वी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि पेड़ काटे जाने, नदी व वायु प्रदूषण के चलते बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग पूरे विश्व के लिए खतरे का संकेत है। पृथ्वी का संतुलन बिगड़ना सभी के लिए एक बड़ी समस्या है। हर किसी को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देना चाहिए। विश्व पृथ्वी दिवस के दिन सभी को पर्यावरण को बेहतर बनाने व पेड़ लगाने का संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम में सीएम फेलो शिवकुमार यादव, रवि सिंह, नीतीश, वीरेंद्र, अविनाश मिश्रा एवं अनेक विद्यालयों के प्रधानाचार्य शिक्षक शामिल रहे। छात्रों ने पृथ्वी दिवस पर अपने विचार व्यक्त किये।

बाढ से बचाव की तैयारियां शुरू

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती । बाढ़ से प्रभावित होने वाले जनपद के लगभग 105 गांव की निगरानी के लिए अधिकारी तैनात करने के लिए जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया है। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित जनपद स्तरीय बाढ़ स्टीयरिंग ग्रुप की बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने निर्देश दिया है कि बैराज से छोड़े जाने वाले पानी के समय पर सतर्क निगाह रखें, बाढ़ प्रभावित गांव की कम्युनिकेशन प्लान तैयार करें तथा अति संवेदनशील गांव पर विशेष सतर्कता बरते।

उन्होने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि समस्त आवश्यक वस्तुओ का टेण्डर का कार्य एक सप्ताह के भीतर पूर्ण कर लिया जाय।

पहलगाम में आतंकी हमला, 24 की मौत

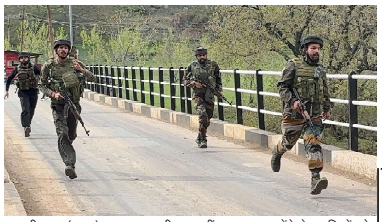

श्रीनगर (आभा)। जम्मू–कश्मीर के लोकप्रिय पर्यटन स्थल पहलगाम में मंगलवार को आतंकवादियों ने अचानक हमला कर दिया। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, इस भयावह हमले में 24 की मौत हो गई, जबकि कई लोग जख्मी बताए जा रहे हैं। घायलों में टूरिस्ट्स और लोकल नागरिक दोनों शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमले की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि इस जघन्य हमले में शामिल किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने देशवासियों को भरोसा दिलाया कि ऐसे लोग इस कायराना हमले के पीछे हैं, उन्हें जल्द ही न्याय के कटघरे में लाया जाएगा।'

पीएम मोदी ने इस सिलसिले में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से भी फोन पर बात की और उन्हें घटना की गंभीरता के मद्देनजर तुरंत कार्रवाई करने को कहा। इसके बाद श्री शाह ने सभी सुरक्षा एजेंसियों के साथ इमरजेंसी रिस्पू मीटिंग बुलाने का ऐलान किया और श्रीनगर रवाना हो गए हैं घटना के बाद पहलगाम और उसके आसपास के इलाकों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। सेना, सीआरपीएफ और स्थानीय पुलिस द्वारा सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। सभी घायलों को पास के अस्पतालों में भर्ती करवाया गया है और इलाज जारी है।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद प्रशासन ने श्रीनगर में इमरजेंसी कंट्रोल रूम बनाया गया किया है ताकि प्रभावित पर्यटकों और उनके परिजनों को हर संभव सहायता मिल सके। जरूरतमंद लोग हेल्पलाइन नंबर 0194–2457543 और 0194–2483651 पर संपर्क कर सकते हैं।

मांगों के समर्थन में शिक्षकों का धरना 1 मई को, बैठक में बनी रणनीति

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ की बैठक मंगलवार को जिलाध्यक्ष चन्द्रिका सिंह की अध्यक्षता में प्रेस क्लब सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में प्रदेश संगठन के आह्वान पर आगामी 1 मई को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय परिसर में प्रस्तावित धरने को लेकर रणनीति बनाई गई जिसमें ब्लाकवार जिला पदाधिकारियों और ब्लॉक पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी गई। बैठक को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष ने कहा कि प्रदेश संगठन के आह्वान पर पुरानी पेंशन, चयन वेतनमान, प्रोन्नत वेतनमान, टाइम एंड मोशन स्टडी, पदोन्नति सहित 14 सूत्रीय मांगों को लेकर धरना प्रस्तावित है। शिक्षकों की वर्षों पुरानी लंबित मांगों को सरकार अनदेखा कर रही है अपनी मांगे मनवाने के लिए आप सब बड़ी संख्या में शामिल होकर धरने को सफल बनाएं। जिला मंत्री बालकृष्ण ओझा ने कहा कि शिक्षको की लम्बित मांगों को मानने के बजाय आए दिन सरकार द्वारा शिक्षकों के विरुद्ध नए नए आदेश जारी होते हैं। धरने में हमारा संख्याबल हमारी मांगों को मजबूती प्रदान करेगा। इसलिए आप सभी बड़ी संख्या में धरने में शामिल होकर धरने को सफल बनाएं। सदर तहसील अध्यक्ष उमाकांत शुक्ल ने कहा कि शिक्षकों की आवाजों को सरकार लगातार अनसुना कर रही है। इसे बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। बैठक को शिवरतन, प्रताप नारायण चौधरी, संयुक्त मंत्री राजेश गिरी, जिला कोषाध्यक्ष दुर्गेश यादव, जिला उपाध्यक्ष शिल्पी पाण्डेय, सुधीर तिवारी, शिवप्रकाश सिंह, प्रवीण श्रीवास्तव, रवीश मिश्र, सुरेश गौड़, रामसागर वर्मा, हरेंद्र यादव,वेद उपाध्याय, डॉ. प्रमोद सिंह, रामपियारे कन्नौजिया, दिनेश सिंह आदि ने संबोधित किया । बैठक में मुख्य रूप से रूकनुद्दीन, रामभवन यादव, विवेक प्रताप सिंह, गिरजेश सिंह, राकेश पाण्डेय, शत्रुजीत यादव, अशोक यादव, सोहन लाल,शिवनंदन मिश्र, मोहम्मद असलम, संजीव सिंह, मुरलीधर, अश्वनी सिंह, अनीश अहमद, रंजन सिंह, मनोज उपाध्याय, अविनाश दुबे, गौरव चौधरी, अनिल पाठक, संतोष पाण्डेय, चंद्रशेखर त्रिपाठी, विजय यादव, उमाशंकर, आशीष दुबे,प्रभाकर पटेल,सोहन लाल उपस्थित रहे।

दलित महिला को घर से निकालने की धमकी भीम आर्मी ने सौंपा ज्ञापन, न्याय की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती । मंगलवार को भीम आर्मी भारत एकता मिशन के मण्डल सह संयोजक अजय आजाद के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा। मांग किया कि पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के ग्राम सभा बायपोखर में अनुसूचित जाति की महिला कुसुम देवी पत्नी दिनेश कुमार के छप्पर के घर को दबंगों से बचाया जाय। 20 मई को कुसुम के बेटी का विवाह है। वह परेशान है कि दबंगो ने यदि झोपड़ी गिरा दिया तो उसका क्या होगा।

डीएम को सौंपे ज्ञापन में कहा गया है कि पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के ग्राम सभा बायपोखर में अनुसूचित जाति की महिला कुसुम देवी पत्नी दिनेश कुमार के छप्पर के घर को गांव के ही ध्रुव कुमार पुत्र राम सरन, रवीन्द्र कुमार, हेमन्त कुमार, सुनीता, नीतू आदि अपने मकान में एक नया दरवाजा खोलकर पुराना रास्ता जो चिन्हाहरण के घर को जाता है रास्ता समेत उसके घर को कब्जा करने की नीयत से गत 16 अप्रैल को घर में चढ आये और जाति सूचक गालियां देने लगे। विरोध करने पर उसे और उसके पति को मारा पीटा। धमकी दिया कि घर छोड़कर भाग जाओ वरना घर में आग लगा देंगे। कुसुम देवी को आशंका है कि उक्त लोग कोई भी अनहोनी कर सकते हैं। उसने अपने परिवार और झोपड़ी के रक्षा की गुहार लगाया है।

ज्ञापन देने के बाद भीम आर्मी भारत एकता मिशन के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य-प्रकाश सचान ने चेतावनी दिया कि यदि न्याय न मिला तो संगठन संघर्ष को बाध्य होगा। ज्ञापन देने वालों में नासिर अली, शैलेन्द्र राना, विशाल, बुद्धि प्रकाश एडवोकेट, रितेश कुमार, श्याम सुन्दर उर्फ पप्पू आदि शामिल रहे।

विकासशील उद्योग व्यापार एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष बने आशीष कल्लू बाबा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल के पूर्व जिला उपाध्यक्ष आशीष उर्फ कल्लू बाबा को विकासशील उद्योग व्यापार एसोसिएशन के प्रदेश महासचिव आनन्द जायसवाल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश सिंह रघुवंशी की संस्तुति पर बस्ती जनपद का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है।

आशीष उर्फ कल्लू बाबा को विकासशील उद्योग व्यापार एसोसिएशन का जिलाध्यक्ष बनाये जाने पर मंगलवार को सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों, व्यापारी नेताओं ने रेलवे स्टेशन काली मंदिर के निकट आशीष उर्फ कल्लू बाबा का फूल मालाओ के साथ स्वागत किया। आशीष उर्फ कल्लू बाबा ने कहा कि एसोसिएशन ने जो दायित्व उन्हें सौंपा है, पूरा प्रयास होगा कि उस पर खरा उतरूं। बताया कि अति शीघ्र पदाधिकारियो की घोषणा कर शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया जायेगा। एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष सिद्धेश कुमार ने कहा कि व्यापारी समस्याओ के निस्तारण के लिये हर स्तर पर संघर्ष किया जायेगा।

आशीष उर्फ कल्लू बाबा को विकासशील उद्योग व्यापार एसोसिएशन का जिलाध्यक्ष मनोनीत किये जाने पर पूर्व सांसद हरीश द्विवेदी, भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्रा, महेश शुक्ल, पूर्व विधायक दयाराम चौधरी, भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष पवन कसौधन, ओमप्रकाश ठाकुर, सतीश सोनकर, राजन ठाकुर, विकास चौधरी, विकास बरनवाल, मनोज गुप्ता, कुदरत अली, ज्ञानू गुप्ता, राम कुमार साहू, दीपू तिवारी, आकाश सोनकर, विनोद चौरसिया, एजाज अहमद, गनपत सोनकर, नरेन्द्र उर्फ नन्दू श्रीवास्तव, मोहित सिन्हा, के साथ ही भाजपा और अनेक सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

कांग्रेस की बैठक में न्याय पंचायत स्तर पर संगठन के गठन का निर्णय

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। मंगलवार को कांग्रेस कार्यालय पर जिलाध्यक्ष विश्वनाथ चौधरी की अध्यक्षता में पार्टी की संगठनात्मक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में संगठन के विस्तार, तहसील, ब्लाक, न्याय पंचायत और बूथ स्तर पर गठन पर विचार विमर्श कर महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

मुख्य अतिथि के रूप में बैठक को सम्बोधित करते हुये कांग्रेस के प्रदेश सचिव और जिला प्रभारी दिलीप निषाद ने कहा कि देश और प्रदेश की जनता भाजपा के झूठे नारों, साम्प्रदायिक धुर्वीकरण की राजनीति से ऊब चुकी है। वह बड़े विश्वास के साथ कांग्रेस की ओर देख रही है ऐसे में हम सबकी जिम्मेदारी है कि कांग्रेस को बूथ स्तर पर मजबूती दे। कहा कि मजबूत संगठन के आधार पर ही कांग्रेस का संकल्प पूरा होगा। कम से कम पार्टी नेताओं को अपना और अपने आस पास के बूथ को चुनावों में जिताने की जिम्मेदारी उठानी पडेगी।

–अपना बूथ जिताने की क्षमता विकसित करें कांग्रेसी– दिलीप निषाद

संगठनात्मक बैठक में पूर्व विधायक अम्बिका सिंह, वरिष्ठ नेता देवेन्द्र श्रीवास्तव, पूर्व अध्यक्ष ज्ञानेन्द्र पाण्डेय ज्ञानू, कौशल किशोर त्रिपाठी, अतीउल्ला सिद्दीकी, शकुन्तला देवी, अवधेश सिंह, नर्वदेश्वर शुक्ल, गिरजेश पाल, साधू शरन आर्य ने कांग्रेस को जमीनी स्तर पर मजबूत करने के लिये महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष विश्वनाथ चौधरी ने कहा कि बैठक में जो महत्वपूर्ण सुझाव आये हैं उनका जमीनी स्तर पर प्रभावी कियान्वयन कराया जायेगा।

मुख्य रूप से बाबूराम सिंह, जयन्त चौधरी, शिव विभूति मिश्र, मंजू पाण्डेय, अमर बहादुर शुक्ल, देवी प्रसाद पाण्डेय, अलीम अख्तर, राम बचन भारती, ई. राज बहादुर निषद, भूमिधर गुप्ता, गुड्डू सोनकर, डा. वाहिद सिद्दीकी, शिव नरायन पाण्डेय, सर्वेश शुक्ल, संजीव त्रिपाठी, राहुल चौधरी, राकेशमणि त्रिपाठी, शौकत अली नन्नू, राम बहादुर सिंह, संदीप श्रीवास्तव, रविन्द्र सिंह राजन, ई. चन्द्रशेखर चौधरी, सुनील पाण्डेय, रविन्द्र सिंह राजन, दीनानाथ शास्त्री, प्रताप नारायण मिश्र, सद्दाम हुसेन, लक्ष्मी यादव, के साथ ही कांग्रेस के अनेक पदाधिकारी, कार्यकता शामिल रहे।

विश्व पृथ्वी दिवस पर गोष्ठी में विमर्श

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती। विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर हरैया कस्बे में स्थित गजाधर सिंह अंगद सिंह एकेडमी के प्रांगण में प्रधानाचार्य सुभाष चन्द्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में गोष्ठी का आयोजन मंगलवार को किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक अजय सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलित करके किया। विद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि ने संबोधित करते हुए कहा कि प्रकृति द्वारा उपलब्ध संसाधनों के दुरुपयोग से हम सभी का जीवन खतरे में आ गया है। लगातार जंगलों की कटाई से एक तिहाई जंगल खत्म हो गए। वर्तमान में हवा, पानी सब दूषित हैं। जिससे निरन्तर रोग बढ़ रहे हैं और लोग असमय मृत्यु के शिकार हो रहे हैं। इसलिए स्वस्थ जीवन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण जरूरी है। पर्यावरण असंतुलन के कारण ध रती से हजारों प्रजातियां खत्म हो गई और कई हजार प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी को पानी बचाने, प्लास्टिक का उपयोग न करने, केमिकल युक्त खाद्य पदार्थों के सेवन से बचने, कचरे का प्रबंधन आदि का संकल्प लेना आवश्यक है। प्रधानाचार्य

–स्वस्थ जीवन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण जरूरी – अजय सिंह

ने कहा कि पर्यावरण असंतुलन के कारण ही हम सभी को विभिन्न प्रकार की आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। हम लोग प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बजाय अपनी सुख सुविधाओं के लिए लगातार प्रकृति का दोहन कर रहे हैं जो कि चिंता का विषय है। कार्यक्रम का संचालन दिनेश पाण्डेय ने किया।

इस अवसर पर रवीश कुमार मिश्र, राना सिंह, भरत सिंह, निर्मल सिंह, शिवम पाण्डेय, विराट तिवारी, विनोद गुप्ता, पंकज सिंह, संतोष श्रीवास्तव, राम नरेश शर्मा, सुधीर पाठक, दिनेश कुमार मिश्र, अमरेश पाण्डेय, सत्येंद्र सिंह, कैलाश तिवारी, दीपक यादव, धनवंत शुक्ल, पवन मिश्र, शिव राम पटेल, कृष्णमोहन, राकेश यादव, सत्यनारायण, अंजू श्रीवास्तव संध्या त्रिपाठी, पूनम सिंह, श्रद्धा त्रिपाठी, सिमरन सिंह, अंजली सिंह, बीनू पाण्डेय, अमित कुमार मिश्र, सपना सिंह, मुस्कान यादव, सोनी शुक्ला, वर्तिका श्रीवास्तव, वंदना विश्वकर्मा, अलगू प्रसाद, अनीता सिंह, संयोगिता श्रीवास्तव, निहारिका सिंह, पदमा मिश्रा, निधि पाण्डेय आदि उपस्थित रहे।

पूर्व विधायक विनय शंकर तिवारी के गिरफ्तारी से रोषः मौन सत्याग्रह कर राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापनः रिहाई की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती । पूर्व मंत्री पं. हरिशंकर तिवारी के पुत्र पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव विनय शंकर तिवारी के गिरफ्तारी को लेकर लोगों में रोष है। मंगलवार को मेधा पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीन दयाल तिवारी के संयोजन में अनेक राजनीतिक, सामाजिक संगठनों के लोग गांधी कला भवन स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी प्रतिमा के समक्ष एकत्र हुआ और मौन सत्याग्रह करते हुये पूर्व विधायक विनय शंकर तिवारी के रिहाई की मांग किया। मौन सत्याग्रह के बाद उपस्थित लोग हाथों में बैनर लिये जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे। यहां डीएम के प्रशासनिक अधिकारी माध्यम से राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा गया।

राष्ट्रपति को भेजे ज्ञापन में कहा गया है कि पूर्व मंत्री पं. हरिशंकर तिवारी के पुत्र पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव विनय शंकर तिवारी को ई. डी. ने राजनीतिक विद्वेष वश गिरफ्तार कर लिया है। यह स्थितियां दुर्भाग्यपूर्ण और चिन्ताजनक है। मांग किया गया है कि विनय शंकर तिवारी का राजनीतिक कारणों से उत्पीड़न बंद किया जाय। उन्हें तत्काल प्रभाव से रिहा किया जाय।

राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजने के बाद मेधा प्रवक्ता दीन दयाल तिवारी, वरिष्ठ सपा नेता गणेश दत्त 'मुन्ना मिश्र', वरिष्ठ कांग्रेस नेता प्रमोद दूबे, सपा नेता हरीश, गिरिजा कुमार पाण्डेय, संजय उपाध्याय, उमेश पाण्डेय 'मुन्ना', सपा नेता अतुल पाण्डेय आदि ने कहा कि पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव विनय शंकर तिवारी को ईडी ने राजनीतिक कारणों से गिरफ्तार किया है। भाजपा नेताओं के इशारे पर विनय शंकर तिवारी की गिरफ्तारी को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। वक्ताओं ने मांग किया कि सपा के वरिष्ठ नेता विनय शंकर तिवारी को तत्काल प्रभाव से रिहा कराया जाय।

मौन सत्याग्रह और ज्ञापन देने वालों में स्वतंत्र कुमार पाण्डेय, प्रमोद यादव, हनुमान गौड़, राजेश चौधरी, रण बहादुर चौधरी, राहुल चौधरी, ब्रम्हदेव मिश्र, मो. हनीफ, नागेन्द्र मिश्र, अंशू उपाध्याय, संदीप उपाध्याय, के.पी. शुक्ल, कृष्ण गोपाल शुक्ल, हिमांशु गोस्वामी, गिरीश चन्द्र गिरी, जय प्रकाश सिंह, हरिनन्दन पाण्डेय, राकेश पाण्डेय, नितीश चौधरी, अवनीश मिश्र एडवोकेट, ओम नरायन पाण्डेय, आशुतोष पाण्डेय, बदरूददीन, समीम खान, अतुल कुमार गौड़, अंशू चौरसिया के साथ ही विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक संगठनों के लिये उपस्थित रहे।

मजदूरी मांगा तो दबंगों ने पीटा डीआईजी से लगाया न्याय की गुहार

–भारतीय बस्ती संवाददाता–
बस्ती । नर्सिंग होम में टाइल्स लगवाने वाले ठेकेदार गोविन्द निषाद ने जब मजदूरी मांगी तो उसे बुरी तरह से मारा पीटा गया। पुलिस में भी जब उसकी सुनवाई नहीं हुई तो उसने सरदार सेना जिलाध्यक्ष विनय चौधरी के साथ डीआईजी से मिलकर न्याय की गुहार लगाया। डीआईजी ने इस मामले में तत्काल कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

डीआईजी को मंगलवार को दिये पत्र में कहा गया है कि मुण्डेरवा थाना क्षेत्र के मूजाडीहा निवासी गोविन्द निषाद ने कोतवाली थाना क्षेत्र के पोखरमिटवा निवासी अमरनाथ सिंह से उनके संतकबीर नगर जनपद के खलीलाबाद कोतवाली थाना क्षेत्र के बडगो में बनावे जा रहे नर्सिंग होम में टाइल्स लगवाने का ठेका लिया। उनके नर्सिंग होम में लगभग 5 लाख रूपये का टाइल्स लगाने का कार्य कराया। पैसा मांगने पर अमरनाथ सिंह टाल मटोल करते रहे। गत 20 अप्रैल 2025 को जब गोविन्द निषाद ने पैसा मांगा तो अमरनाथ सिंह, उनके पुत्र अमित सिंह, नर्सिंग होम के तीन कर्मचारियों ने मिलकर उसे लोहे के राड, लात घूसों से मारा पीटा इससे वह बेहोश हो गया। होश में आने पर उसने संतकबीर नगर जनपद के कोतवाली खलीलाबाद में घटना की सूचना दिया। पुलिस ने उसकी तहरीर लेने से इंकार कर दिया। कहा कि वह बड़े आदमी है और उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज नहीं हो पायेगा। डीआईजी से समूचे मामले की जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत कराकर न्याय दिलाने और बकाया धन दिलाने की मांग किया गया है।

–सरदार सेना ने किया प्रभावी कार्रवाई की मांग

डीआईजी को ज्ञापन देने वालों में संदीप कुमार निषाद, अंकुर निषाद, गोविन्द कुमार, अनय, साधु शरन, सुमिरन, राम अशीष, अक्षय कुमार, सूरज, राहुल, शिवपाल, मुकेश, पतिराम निषाद, बलिराम, प्रदीप कुमार के साथ ही सरदार सेना के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 23 अप्रैल 2025 बुधवार

सम्पादकीय

न्यायपालिका, कार्यपालिका और टकराव

कुछ समय पहले तक उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की सुप्रीम कोर्ट को लेकर की गई टिप्पणियों की चर्चा होती रही है। कहा गया कि इससे न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच टकराव सार्वजनिक हुआ है। चर्चा रही कि इससे जनमानस में अविश्वास व भ्रम की स्थिति बनती है। अब इस टिप्पणी से उत्साहित होकर भाजपा के दो सांसदों ने लोकतंत्र के इस महत्वपूर्ण स्तंभ पर अमर्यादित ढंग से निशाना साधा है। उस महत्वपूर्ण स्तंभ पर जिसका कार्य संविधान की गरिमा बनाना और न्याय सुनिश्चित करना है। दरअसल, विधानसभाओं में विधेयकों को मंजूरी देने के लिये समय सीमा तय करने वाले सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला देते हुए उत्तर प्रदेश के पूर्व उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा ने कहा कि 'कोई भी राष्ट्रपति को चुनौती नहीं दे सकता, क्योंकि राष्ट्रपति सर्वोच्च हैं।' वहीं दूसरी ओर लोकसभा में झारखंड के गोड्डा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले सांसद निशिकांत दुबे ने भी चिंताजनक ढंग से तीखा हमला किया है। उन्होंने कहा कि अगर सुप्रीम कोर्ट कानून बनाने का काम अपने हाथ में ले ले तो संसद और राज्य विधानसभाओं को बंद कर देना चाहिए। यहां तक कि उन्होंने देश के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना को भी नहीं बख्शा और उन्हें देश को गृह युद्ध की ओर धकेलने वाला बताया। इतना ही नहीं, कुछ समय उपरांत उन्होंने अपने बयान को और हल्का करते हुए कहा कि एक पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त 'मुस्लिम आयुक्त' की भूमिका में रहे हैं। बहुत संभव है कि दोनों भाजपा नेताओं ने पार्टी में अपना कद बढ़ाने के मकसद से ऐसे बयान दिए होंगे। यह भी कि उन्होंने पार्टी के प्रति अपनी निष्ठा को बड़ा करके दिखाने का ही प्रयास किया। उन्हें लगता है कि शायद पार्टी उन्हें उनकी वफादारी के लिये पुरस्कृत करेगी। लेकिन भगवा पार्टी ने उन्हें सिर्फ फटकार ही लगाई है। वहीं दूसरी ओर पार्टी ने खुद को उनकी व्यक्तिगत टिप्पणियों से अलग रखने की बात कही है।

निस्संदेह भाजपा को लोकतंत्र के अभिन्न अंग के रूप में न्यायपालिका के प्रति अपने सम्मान की भी पुष्टि करनी चाहिए। वहीं दूसरी ओर विपक्ष का कहना है कि जब तक दोनों भाजपा नेताओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई नहीं की जाती है, तब तक भाजपा का यह दावा अविश्वसनीय ही बना रहेगा। पहले भी भाजपा के शीर्ष नेताओं ने तब भी उस बयानबाजी को प्रश्रय नहीं दिया, जब आक्रामक बयानबाजी करने वाली सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने अनर्गल बयानबाजी की थी। उल्लेखनीय है कि प्रज्ञा ने महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त कहकर हंगामा कर दिया था। तब भी पार्टी ने बस इतना किया था कि उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया था और संसदीय पैनल से हटा दिया था। तब उन्होंने दो बार लोकसभा में माफी भी मांगी थी। कालांतर समय के साथ मामला शांत हो गया था। जैसा कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार को उम्मीद भी थी। लेकिन इस बार भी यदि ऐसा ही नतीजा सामने आता है तो यह उचित नहीं कहा जा सकता। यह देखते हुए कि दुबे और शर्मा ने मर्यादा की एक सीमा रेखा को पार किया है ,यह स्पष्ट रूप से न्यायालय और संविधान की अवमानना के दायरे में है। जिसके लिये उन्हें क्षमा नहीं किया जाना चाहिए। दरअसल, ऐसे अप्रिय विवादों से जनता में न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच टकराव का नकारात्मक संदेश जाता है। जिससे अनावश्यक संवैधानिक संकट की स्थिति भी बन सकती है। जनता में लोकतंत्र के आधारभूत स्तंभों को लेकर अविश्वास का भाव पैदा नहीं होना देना चाहिए। दरअसल, ऐसे अनावश्यक विवादों से किसी बड़े बदलाव की उम्मीद नहीं की जा सकती। बल्कि तल्ख बयानबाजी से बेकार की बहस बढ़ने की आशंका ही बलवती होती है। खासकर संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों को तो ऐसी बयानबाजी से परहेज करना ही चाहिए। दरअसल, संविधान ने न्यायपालिका को कुछ ऐसे अधिकार दिए हैं कि जब पूर्ण न्याय के लिये कोई अन्य रास्ता नहीं बचता, तब वह विशिष्ट अनुच्छेदों से मिली शक्तियों का प्रयोग कर सकती है। दूसरे शब्दों में इसे उम्मीद के एक दरवाजे के रूप में ही देखा जाना चाहिए।

आखिर ब्राह्मणों ने बिगाड़ा क्या है?

—नीरज कुमार दुबे—

अपनी फिल्मों की तरह असल जिन्दगी में भी अभद्र भाषा के लिए कुख्यात फिल्मकार अनुराग कश्यप ने ब्राह्मणों पर पेशाब करने की बात कह कर अपनी मानसिक स्थिति का परिचय दिया है। हालांकि जब बयान की आलोचना की गयी तो उन्होंने कहा है कि उनकी टिप्पणी को सही संदर्भ में नहीं लिया गया। रोज सुबह–शाम ईश्वर की आराधना करते समय सबके कल्याण और विश्व में शांति के लिए प्रार्थना करने वाले ब्राह्मणों ने किसी का क्या बिगाड़ा है? यह सवाल हम इसलिए कर रहे हैं क्योंकि कभी दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की दीवारों पर श्राह्मण भारत छोड़ोश का नारा लिख कर वामपंथी सामाजिक तनाव फैलाने का प्रयास करते हैं तो कभी खबर आती है कि कर्नाटक में एक परीक्षा केंद्र में छात्रों से परीक्षा कक्ष में प्रवेश करने से पहले उन्हें जनेऊ उतारने के लिए कहा जाता है। कभी खबर देखने को मिलती है कि एक फिल्म निर्माता निर्देशक ब्राह्मणों पर पेशाब करने की बात खुलेआम कह देता है।

देखा जाये तो हमारे देश की जाति व्यवस्था में ब्राह्मण को गुरु, पूज्य और यहाँ तक कि तीर्थस्वरूप माना गया है। कोई भी शुभ कार्य करना हो तो ब्राह्मण ही उसे संपन्न कराता है। पौराणिक ग्रंथों में तो उल्लेख मिलता है कि ब्राह्मण को कभी निराश नहीं करना चाहिए और ब्राह्मणों को दिये जाने वाला दान–दक्षिणा जन्म जन्मांतरों तक मनुष्य को अक्षय फल प्रदान करता है। लेकिन आज ब्राह्मणों के अपमान का फैशन–सा चल पड़ा है। चूंकि ब्राह्मण अपने हक के लिए या अपने खिलाफ हो रहे अत्याचार के विरोध में सड़कों पर नहीं उतरते इसलिए सरकारों का ध्यान भी उनकी ओर नहीं जाता। देखा जाये तो इतिहास गवाह है कि ब्राह्मणों ने कभी विद्रोह नहीं किया ना ही अपने हक के लिए कोई बड़ी लड़ाई लड़ी है। ब्राह्मण का प्रयास रहता है कि समाज में शांति और समृद्धि बनी रही। ब्राह्मणों के खिलाफ अक्सर अफवाहें और दुष्प्रचार अभियान भी चलाये जाते हैं लेकिन वह खामोशी से यह सोचते हुए सब कुछ देखते रहते हैं कि एक दिन प्रभु कृपा से सच सामने आ ही जायेगा।

जहां तक कर्नाटक के शिवमोगा में सीईटी परीक्षा केंद्र आदिचुंचनगिरि पीयू कॉलेज में छात्रों से परीक्षा कक्ष में प्रवेश करने से पहले उन्हें जनेऊ उतारने के लिए कहने की बात है तो इसको देखकर हर कोई स्तब्ध है। कर्नाटक ब्राह्मण सभा के सदस्य नटराज भागवत की शिकायत के बाद मामला दर्ज कर लिया गया है। देखना होगा कि इस मामले में कोई बड़ी कार्रवाई होती है या नहीं लेकिन जिसने भी जनेऊ उतारने के लिए कहा या कहलवाया उसे पता होना चाहिए कि यज्ञोपवीत यानि जनेऊ ब्राह्मण को प्रदत्त महान शक्ति है। यह शक्ति अत्यन्त शुद्ध चरित्रता और कठिन कर्तव्य परायणता प्रदान करने वाली है। यज्ञोपवीत न तो मोतियों का है और न स्वर्ण का, फिर भी यह ब्राह्मणों का आभूषण है। इसके द्वारा देवता और ऋषियों का ऋण चुकाया जाता है। जिन्होंने छात्रों को जनेऊ उतारने के लिए कहा उन्हें पता होना चाहिए कि यज्ञोपवीत से सत्य व्यवहार की आकांक्षा, अग्नि के समान तेजस्विता और दिव्य गुणों की पवित्रता प्राप्त होती है।

वहीं दूसरी ओर, अपनी फिल्मों की तरह असल जिन्दगी में भी अभद्र भाषा के लिए कुख्यात फिल्मकार अनुराग कश्यप ने ब्राह्मणों पर पेशाब करने की बात कह कर अपनी मानसिक स्थिति का परिचय दिया है। हालांकि जब बयान की आलोचना की गयी तो उन्होंने कहा है कि उनकी टिप्पणी को सही संदर्भ में नहीं लिया गया। देखा जाये तो अनुराग कश्यप की कई फिल्में शीघ्र आने वाली हैं इसलिए सुर्खियों में आने और अपनी फिल्मों के प्रचार के लिए उन्होंने ब्राह्मणों के खिलाफ अमर्यादित बयान दे डाला। वैसे भी आजकल सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए किसी समाज या किसी इतिहास पुरुष के खिलाफ कोई विवादित बयान देने का चलन हो गया है। हम आपको यह भी बता दें कि शास्त्र सम्मत तरीके से अपना जीवन जीने वाले ब्राह्मणों पर अनुराग कश्यप की अशोभनीय टिप्पणी से समाज में रोष व्याप्त होना स्वाभाविक है इसलिए कुछ संगठनों की ओर से प्रदर्शन भी किये गये हैं। बहरहाल, कुछ समय पहले दिल्ली स्थित जेएनयू की दीवारों पर श्राह्मण भारत छोड़ोश का नारा लिख कर अपनी जातिवादी सोच को प्रदर्शित करने वालों को पता होना चाहिए कि भारत की आजादी का शुभ मुहूर्त भी ब्राह्मणों ने ही निकाला था। (इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

सभ्यता को बचाने के लिये पृथ्वी संरक्षण जरूरी

—ललित गर्ग—

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से निपटने और जैव विविधता संकट को रोकने के लिए कार्रवाई का एक क्रांतिकारी आह्वान है पृथ्वी दिवस जो पूरे विश्व में 22 अप्रैल को मनाया जाता है। पृथ्वी या सृष्टि के संरक्षण और स्थिरता के लिए जागरूकता पैदा करना इसलिये आवश्यक हो गया कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और वनों की कटाई के कारण प्रकृति एवं पर्यावरण पर गहरे संकट है। वर्ष 2025 में इस दिवस की थीम है 'हमारी शक्ति, हमारा ग्रह', जो यह स्पष्ट करता है कि जलवायु परिवर्तन और हमारे पर्यावरण के दुरुपयोग से निपटने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा की तत्काल आवश्यकता है। हमारे स्वास्थ्य, हमारे परिवारों, हमारी आजीविका और हमारी धरती को एक साथ संरक्षित करने का समय आ गया है। पृथ्वी दिवस आधुनिक पर्यावरण आंदोलन की वर्षगांठ का प्रतीक है, जो पहली बार सन् 1970 में मनाया गया था। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं पृथ्वी के संरक्षण के लिये जागरूक करना है। दुनिया में पृथ्वी के विनाश, प्रकृति प्रदूषण एवं जैविक संकट को लेकर काफी चर्चा हो रही है।

190 से अधिक देशों को पृथ्वी दिवस में शामिल करते हुए एक वैश्विक आंदोलन बन गया है जो प्लास्टिक प्रदूषण, नवीकरणीय संसाधन, ग्लोबल वार्मिंग और टिकाऊ जीवन जैसी प्रमुख पर्यावरणीय चिंताओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है। वृक्षारोपण, सफाई अभियान, शैक्षिक अभियान और वकालत वैश्विक स्तर पर सरकारों, संगठनों, स्कूलों और समुदायों द्वारा की जाने वाली गतिविधियों में से हैं। इसका उद्देश्य लोगों को पर्यावरण की दृष्टि से अधिक सही निर्णय लेने तथा पृथ्वी के अनुकूल नीतियों के पक्ष में खड़ा करता है और इस बात पर जोर देता है कि आपकी उम्र चाहे जो भी हो या आप कहीं भी रहते हों, आप पृथ्वी को अधिक स्वस्थ और टिकाऊ बनाने में योगदान दे सकते हैं और ऐसा करते हुए शांति की स्थापना एवं शांतिपूर्ण जीवन को सुदृढ़ बना सकते हैं। इस दिवस के माध्यम से ऐसे विचारों एवं जीवनशैली को संगठित करना है जिससे पर्यावरण नीति निर्माता सरकारों को प्रेरित करें ताकि पर्यावरणीय स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के लिए कानूनों और प्रथाओं में बदलाव हो सके एवं वैज्ञानिक नवाचारों और हरित प्रौद्योगिकियों के विचार को बल देते हुए पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करने और भविष्य में स्थिरता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा सके।

आज विश्व भर में हर जगह प्रकृति का दोहन एवं शोषण जारी है। जिसके कारण पृथ्वी पर अक्सर उत्तरी ध्रुव की ठोस बर्फ का कई किलोमीटर तक पिघलना, सूर्य की पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद होना, भयंकर तूफान, सुनामी और भी कई प्राकृतिक आपदाओं का होना आदि ज्वलंत समस्याएं विकराल होती जा रही है, जिसके लिए मनुष्य ही जिम्मेदार है। ग्लोबल वार्मिंग के रूप में जो आज हमारे सामने हैं। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव–जन्तु व वनस्पति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। जीव–जन्तु अंधे हो जाएंगे। लोगों की त्वचा झुलसने लगेगी और कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ जाएगी एवं अनेक नयी–नयी व्याधियां रह–रहकर जीवन संकट का कारण बनती रहेगी। इसीलिये विश्व पृथ्वी दिवस की आज ज्यादा प्रासंगिकता एवं उपयोगिता है। यह दीर्घकालिक परिवर्तन को संभव बनाने की दिशा में काम करेगा क्योंकि यह पर्यावरण जागरूकता की संस्कृति को विकसित करता है और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को पृथ्वी का सक्रिय संरक्षक बनने के लिए सशक्त बनाता है।

जिस पृथ्वी को हम माँ का दर्जा देते हैं उसे हम खुद अपने ही हाथों दूषित करने में कैसे लगे रहते हैं? आज जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए सबसे बड़ा संकट बन गया है। अगर पृथ्वी के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग जाए तो मानव जीवन कैसे सुरक्षित एवं संरक्षित रहेगा? पृथ्वी है तो सारे तत्व हैं, इसलिये पृथ्वी अनमोल तत्व है। इसी पर आकाश है, जल, अग्नि, और हवा है। इन सबके मेल से प्रकृति की संरचना सुन्दर एवं जीवनमय होती है। अपने.अपने स्वार्थ के लिए पृथ्वी पर अत्याचार रोकना होगा और कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर ध्यान केंद्रित करना होगा। अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से औद्योगिक क्रांति पर नियंत्रण करना होगा, क्योंकि उन्हीं के कारण कार्बन उत्सर्जन और दूसरी तरह के प्रदूषण में बढ़ोतरी हुई है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कई प्रजाति के जीव–जंतु, प्राकृतिक स्रोत एवं वनस्पति विलुप्त हो रहे हैं, जिससे पृथ्वी असंतुलित हो रही है। विलुप्त होते जीव–जंतु और वनस्पति की रक्षा के लिये विश्व–समुदाय को जागरूक करने के लिये ही इस दिवस को मनाया जाता है।

आज चिन्तन का विषय न तो रूस–यूक्रेन युद्ध है, न अमेरिका का टैरिफ वार है और न मानव अधिकार, न कोई विश्व की राजनैतिक घटना और न ही किसी देश की रक्षा का मामला है। चिन्तन एवं चिन्ता का एक ही मामला है लगातार विकराल एवं भीषण आकार ले रही गर्मी, सिकुड़ रहे जलस्रोत, विनाश की ओर धकेली जा रही पृथ्वी एवं प्रकृति के विनाश के प्रयास। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता प्रदूषण, नष्ट होता पर्यावरण, दूषित गैसों से छिद्रित होती ओजोन की ढाल, प्रकृति एवं पर्यावरण का अत्यधिक दोहन– ये सब पृथ्वी एवं पृथ्वीवासियों के लिए सबसे बड़े खतरे हैं और इन खतरों का अहसास करना ही विश्व पृथ्वी दिवस का ध्येय है। प्रतिवर्ष धरती का तापमान बढ़ रहा है। आबादी बढ़ रही है, जमीन छोटी पड़ रही है। हर चीज की उपलब्धता कम हो रही है। आक्सीजन की कमी हो रही है। साथ ही साथ हमारा सुविधावादी नजरिया एवं जीवनशैली पृथ्वी और उसके पर्यावरण एवं प्रकृति के लिये एक गंभीर खतरा बन कर प्रस्तुत हो रहा हैं।

जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। आधुनिकीकरण के इस दौर में जब इन संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है तो ये तत्व भी खतरे में पड़ गए हैं। अनेक शहर पानी की कमी से परेशान हैं। कल्लखानों में कटती गायों की निरीह आहें जिसे बेचैन कर देती थी। जो वन्य पशु–पक्षियों को खदेड़कर अपनी बस्तियों बनाने का बौना स्वार्थ नहीं पालता था। अब वही मनुष्य अपने स्वार्थ एवं सुविधावाद के लिये सही तरीके से प्रकृति का संरक्षण न कर पा रहा है और उसके कारण बार–बार प्राकृतिक आपदाएं कहर बरपा रही है। रेगिस्तान में बाढ़ की बात अजीब है, लेकिन हमने राजस्थान में अनेक शहरों में बाढ़ की विकराल स्थिति को देखा हैं। वह दिन दूर नहीं होगा, जब हमें शुद्ध पानी, शुद्ध हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध वातावरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

संकटमय पशु आबादी और बदलता जीवन

—क्षमा शर्मा—

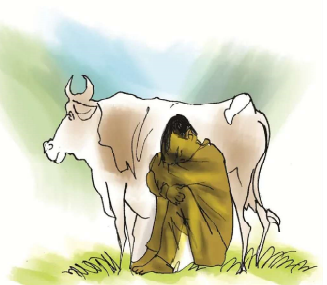

अपने ही इस अखबार में एक बड़ी रपट छपी थी। जिसमें बताया गया था कि पंजाब में पशुओं की गणना से पता चला कि उनकी संख्या, पिछली गणना के मुकाबले कम हो गई है। पशुओं की गणना हर पांच साल में की जाती है। इनकी संख्या में 8.5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। जिनकी गणना की गई उनमें भैंस, गाय, भेड़, बकरियां, घोड़े, टट्टू, खच्चर, गधे, ऊंट, सूअर, खरगोश, कुत्ते और हाथी शामिल हैं। क्या इस गणना में बिल्लियों, मुर्गियों, बैलों को भी शामिल किया गया था? इसी रिपोर्ट में कहा गया कि राज्य में अब बस सिर्फ 127 गधे, 77 ऊंट और 1 हाथी ही बचा है। एक अच्छी खबर यह है कि देसी गायों की संख्या बढ़ती जा रही है। दुधारू पशुओं की घटती संख्या का असर दूध उत्पादन पर नहीं पड़ा है। हालांकि 2019 की गणना में बताया गया था कि भारत में पशुओं की संख्या 2012 के मुकबले 4.6 प्रतिशत अधिक है। हो सकता है पांच साल में यह कम हो गई हो। 2022 में डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की रिपोर्ट में बताया गया था कि पूरी दुनिया में जंगलों में रहने वाले पशु तेजी से कम हो रहे हैं। उनमें 69 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई थी।

पालतू पशुओं की संख्या कम होने का बड़ा कारण यह है कि लोग गांव छोड़कर शहरों की तरफ या विदेश जा रहे हैं। ऐसे में जब युवा ही नहीं होंगे साथ में तो पशुओं की देखभाल कौन करे। निरुसंदेह, इनकी देखभाल में काफी समय और मेहनत भी लगती है। इनके रहने के लिए अतिरिक्त जगह भी चाहिए। शहरों के फ्लैट सिस्टम में तो दुधारू पशु पाले ही नहीं जा सकते। हां, सालों पहले कोलकाता में एक आदमी ने अपने आठवीं मंजिल के फ्लैट में गाय पाली थी।

पशुओं की हो रही कमी सिर्फ पंजाब की ही बात नहीं है, पूरे भारत की बात है। रिपोर्ट चाहे कुछ भी कहती हो, पशु पालने में बहुत मेहनत लगती है। एक बार पंजाब के लोगों का ही एक साक्षात्कार पढ़ रही थी, जिसमें बताया गया था कि अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी जो महिलाएं विवाह करके आती हैं, उनकी रुचि खेती के कामों में नहीं है। हम जानते ही हैं कि पशुओं की देखभाल, उनकी सानी–पानी, उनका दूध दुहना आदि का काम बड़ी संख्या में महिलाएं ही करती रही हैं। लेकिन अब महिलाओं की यह पीढ़ी खत्म होने के कगार पर है। पढ़ी–लिखी लड़कियों की इस काम में इतनी दिलचस्पी भी नहीं। न ही उनमें इतनी मेहनत करने की ताकत है।

उत्तर प्रदेश में भी यही हाल है। बल्कि कहें कि पूरे देश में ही अब घरों में पशु पालने का चलन कम होता जा रहा है। हालांकि उत्तर प्रदेश के बारे में कहा जाता है कि वहां सबसे अधिक पशु हैं। पशुओं को धन कहा गया है। गो धन, गज धन, बाज धन। यानी कि गाय, हाथी और घोड़े धन जैसे ही होते हैं। गाय के दूध से ही दही, मक्खन, छाछ मिलता है। पहले खेती के कामों के लिए बछड़े भी देती थी, जिनकी इन दिनों दुर्दशा है। ट्रैक्टर के आने के बाद चूंकि बैलों की जरूरत नहीं रही, तो अब वे मारे–मारे फिरते हैं। कोई उन्हें नहीं पालता। वैज्ञानिकों ने भी बैलों की पूरी प्रजाति को खत्म करने की ठान ली है। कुछ साल पहले बताया गया था कि वैज्ञानिकों ने ऐसी प्रविधि विकसित कर ली है, जिनमें गायें अब बस बछियों को ही जन्म देंगी। हमारे देखते–देखते एक पूरी प्रजाति नष्ट हो जाएगी। सिर्फ म्यूजियम्स में बचेगी। मनुष्य की स्वार्थपरता का यह एक नमूना भर है।

दूसरे नम्बर का धन गज धन यानी कि हाथी। हाथी युद्ध से लेकर बहुत से कार्य में काम आता था। अमीर लोग अपनी अमीरी का प्रदर्शन करने के लिए दरवाजे पर हाथी बांधते थे। और घोड़े, उनकी उपयोगिता के तो कहने ही क्या। वे युद्ध में तो काम आते ही थे, परिवहन का साधन भी थे। माल की ढुलाई भी करते थे।

लेकिन बदलते वक्त के साथ अब बहुत कम लोग पशु पालना चाहते हैं। एक–दो किलो दूध के लिए कौन इन्हें पाले। जब आने–जाने के इतने त्वरित साधन मौजूद हों, तो भला घोड़े की क्या जरूरत। जैसा कि पंजाब की रिपोर्ट में बताया गया कि पशुओं की संख्या कम होने के बावजूद देश में दूध की कमी नहीं है। इसका बड़ा कारण यह भी है कि अपने यहां 1970 में ही दूध का उत्पादन बढ़ाने के लिए नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड की स्थापना की गई थी। इससे जुड़े डॉ. वर्गीज कुरियन का सबसे बड़ा उद्देश्य दूध के उत्पादन को बढ़ाकर भारत को इस मामले में आत्मनिर्भर बनाना था। यह दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादन प्रोग्राम था। गुजरात से शुरू हुआ यह प्रोग्राम पूरे भारत में छा गया था।

डॉ. वर्गीज कुरियन को मिल्कमैन आफ इंडिया भी कहा जाता था। उन्होंने न केवल गुजरात में बनाए दूध और उससे जुड़े तमाम उत्पादों को भारत के घर–घर पहुंचाया बल्कि इस आंदोलन से किसानों और विशेषकर स्त्रियों को भी बहुत लाभ हुआ। उनकी आय बढ़ी। इसे अमूल का नाम दिया गया था। आज भी बहुत से लोग इन उत्पादों का उपयोग करते हैं। अमूल के विज्ञापन भी बहुत चर्चित रहते आए हैं। इसका मालिकाना हक भी दूध उत्पादन करने वालों के पास था। इसी विषय पर उन दिनों श्याम बेनेगल ने मंथन नाम से फिल्म बनाई थी। इसमें स्मिता पाटिल ने शानदार अभिनय किया था।

इसके बाद तो बहुत–सी अन्य डेयरियां भी खुलीं। भारत की दस प्रमुख डेयरियों में अमूल (गुजरात), मदर डेयरी (दिल्ली), मिल्मा (केरल), दूधसागर (मेहसाणा, गुजरात), नंदिनी (कर्नाटक), पराग (महाराष्ट्र), स्नीबर (अमेरिका), वेरका (पंजाब) आवनि, (तमिलनाडु) आदि शामिल हैं। हालांकि, 1930 में ही अमूल के आने से पहले पोलसन ने भारत में दूध सप्लाई करने का काम किया था।

शायद दूध क्रांति का ही फल है कि देश में दूध और उससे जुड़े उत्पादों की कोई कमी नहीं है। इसी कारण अब गांवों में भी इक्का–दुक्का घरों में ही पालतू पशु दिखाई देते हैं। इस लेखिका के घर में भी बहुत से पशु पाले जाते थे। गांव के घर–घर में वे मौजूद थे। लेकिन अब कहीं–कहीं ही दिखाई देते हैं। शहरों में तो पशुओं के लिए टैक्स भी देना पड़ता है। अड़ोसी–पड़ोसी गंदगी की शिकायत भी करते हैं। ऐसे में पशु पाले भी कौन।

इसके अलावा इन दिनों भारत में जो पशु खास तौर से गायें और गो वंश जब बूढ़ा हो जाता है, तो उन्हें यों ही छोड़ दिया जाता है। वे भूखे मरते हैं। किसानों के लिए ये भारी समस्या भी है।

पचास–साठ के दशक में भारतीय रेल ट्रांसफर के वक्त अपने कर्मचारियों को मालगाड़ी के दो डिब्बे सामान ढोने के लिए देती थी। इसे कि–कैटल कहा जाता था। यानी कि अवधारणा यह थी कि कर्मचारियों के सामान में जानवर भी होंगे। अब ऐसा होता है कि नहीं, पता नहीं। तब सिर्फ गांव में ही नहीं, शहरों में भी खूब जानवर पाले जाते थे। यह शायद नौकरीपेशा लोगों और शहरों की तरफ पलायन करने वाले लोगों की दूसरी–तीसरी पीढ़ी रही होगी, जिसका सम्पर्क गांवों से भी था। अब पीढ़ियां बदल गई हैं, रहन–सहन के तौर–तरीके भी।–लेखिका वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एक साथ चुनाव से होगा देश का विकास –पंकज चौधरी

संवाददाता–महराजगंज। महाराजगंज में वन नेशन, वन इलेक्शन विषय पर आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने महत्वपूर्ण विचार रखे। जिला पंचायत सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि बार–बार चुनाव कराना एक बड़ी चुनौती है। मंत्री ने बताया कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों की कोई तय समय–सीमा नहीं होती। यह सांसदों और विधायकों के विश्वास मत पर निर्भर करता है। जब पंचायत और नगर पालिका के चुनाव भी जुड़ जाते हैं, तो देश लगातार चुनावी माहौल में रहता है। पंकज चौधरी ने कहा कि बार–बार चुनाव का सीधा असर प्रशासनिक निर्णयों और विकास कार्यों पर पड़ता है। इससे जनता के पैसे और राष्ट्रीय संसाधनों का दुरुपयोग होता है। उन्होंने बताया कि एक साथ चुनाव कराने से मतदाता एक ही दिन में दोनों स्तर की सरकारों के लिए वोट कर सकेंगे। मंत्री ने यह भी बताया कि एक साथ चुनाव कोई नई बात नहीं है। 1951 से 1967 तक लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होते थे। इसके बाद अलग–अलग समय पर चुनाव होने लगे। भाजपा जिलाध्यक्ष संजय पाण्डेय ने कहा कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य वन नेशन, वन इलेक्शन पर विचार–विमर्श और नागरिकों से सुझाव लेना था।

ममता बनर्जी का हिंदूवादी संगठनों ने फूंका पुतल

संवाददाता–कुशीनगर। हिंदूवादी संगठनों और भाजपा नेताओं ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ आक्रोश रैली निकाली। मंगलवार शाम साढ़े पांच बजे कप्तानगंज नगर पंचायत के सुभाष चौक पर बजरंग दल और पूर्व हिन्दू युवा वाहिनी के कार्यकर्ता एकत्र हुए। प्रदर्शनकारियों ने सुभाष चौक से आजाद चौक तक पैदल मार्च किया। आजाद चौक पर कस्बा पुलिस चौकी से मात्र 30 मीटर की दूरी पर ममता बनर्जी का पुतला फूंका गया। स्थानीय पुलिस यातायात व्यवस्था और सुरक्षा के लिए मौजूद रही। भाजपा नेता संजय सिंह मुन्ना ने बंगाल में हिंदुओं पर कथित अत्याचार का आरोप लगाया। उन्होंने बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की। उन्होंने कहा कि वहां हिंदू बहन–बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री राजेश्वर सिंह के पुत्र नीरज सिंह शबिट्टू भी शामिल हुए। उन्होंने एक विवादास्पद बयान देते हुए कहा कि अगर योगी आदित्यनाथ की अनुमति मिले तो वे ममता बनर्जी को जिंदा जलाने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि बंगाल में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार से सभी हिंदू आक्रोशित हैं।

खेत में लगी आग से 16 बीघे गेहूं की फसल राख

संवाददाता–श्रावस्ती। बिजली लाइन में शार्टसर्किट होने से निकली चिनगारी से खेतों में आग लग गई। देखते ही देखते आग से खेतों में लगी 16 बीघे गेहूं की फसल जलकर राख हो गई। मौके पर पहुंची दमकल टीम ने कड़ी मशक्कत कर आग पर काबू पाया। सिरसिया थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत मसहाकला के मजरा सेमरा बैरियाकुंडी गांव के बाहर खेतों से होकर 11 हजार बिजली की लाइन गुजरी है। मंगलवार दोपहर में अचानक बिजली के तार में शार्टसर्किट होने पर निकली चिनगारी से गांव निवासी उपेन्द्र चतुर्वेदी पुत्र ईश्वरदत्त चतुर्वेदी के खेत में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने बिकराल रूप धारण कर लिया और गेहूं की फसल धूं धूं कर जलने लगी। उठता धुंआ देख ग्रामीण भागते हुए खेत में पहुंचे और आग बुझाने की कोशिश करने लगे। लेकिन आग की लपटों के आगे विवश रहे। तेज हवा चलने के कारण आग तेजी से फैल रही थी और आग ने बगल के राम समुझ गौतम पुत्र मथुरा प्रसाद, तेजराम चतुर्वेदी पुत्र चंद्र शेखर चतुर्वेदी व संतोषी लाल गौतम पुत्र मथुरा प्रसाद के खेत को भी अपनी आगोश में ले लिया।

कार्यालय ग्राम पंचायत-भैसा पाण्डेय वि0ख0 बनकटी जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 24–04 2025 से 30–04–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 30–04–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 02.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समसिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खंड़जा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(प्रभावती) ग्राम प्रधान **(बाल्मीकि)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

कार्यालय ग्राम पंचायत-टिनिच शुक्ल वि0ख0 सल्टौआ गोपालपुर जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 23–04 2025 से 25–04–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 26–04–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 02.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समसिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खंड़जा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(रामदीन शुक्ल) ग्राम प्रधान **(अरूणेश पाल)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

कार्यालय ग्राम पंचायत-मनिकौरा कला वि0ख0 बनकटी जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 26–04 2025 से 01–05–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 01–05–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 02.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समसिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खंड़जा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(ललिता पाण्डेय) ग्राम प्रधान **(बाल्मीकि)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

कार्यालय ग्राम पंचायत-कथकपुरवा वि0ख0 रूधौली जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 23–04 2025 से 30–04–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 01–05–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 01.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समसिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खंड़जा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(मो0 असलम) ग्राम प्रधान **(जयकेश कुमार राव)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

कार्यालय ग्राम पंचायत-कबरा वि0ख0 बनकटी जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 27–04 2025 से 02–05–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 02–05–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 02.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समसिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खंड़जा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(अभिषेक) ग्राम प्रधान **(बाल्मीकि)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

कार्यालय ग्राम पंचायत-जमोहरा वि0ख0 साऊंघाट जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 23–04 2025 से 29–04–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 30–04–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 01.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समसिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खंड़जा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(यासमीन) ग्राम प्रधान **(मनोज वर्मा)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

अदालती नोटिस

प्रारूप 7

(देखे नियम–11 (1)

घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005 की धारा–12 (1) के अधीन हाजिर होने के लिए सूचना

अदालत–श्रीमान जे0एम0/ एफ0टी0 सी0 महोदय बस्ती जिला–बस्ती

परिवाद वाद सं0 336/2021

थाना–गौर

सरोज यादव

बनाम

विजय यादव आदि

1. विजय यादव उम्र लगभग 32 वर्ष पुत्र राम विलास यादव 2. राम विलास उम्र लगभग 54 वर्ष पुत्र अज्ञात 3. प्रभावती देवी उम्र लगभग 52 वर्ष पत्नी राम विलास 4. पप्पू यादव उम्र लगभग 33 वर्ष पुत्र राम विलास 5. रेनू यादव उम्र लगभग 30 वर्ष पत्नी पप्पू यादव 6. रिंकी यादव उम्र लगभग 22 वर्ष पुत्री राम विलास 7. रिंजू यादव उम्र लगभग 20 वर्ष पुत्री राम विलास ग्राम बैजपुर पोस्ट दौलतपुर थाना खोड़ारे तहसील मनकापुर जिला–गोण्डा उ0प्र0

तारीख पेशी 05–05–2025

याची ने घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम, 2005 (2005 का 43) की धारा– 12 के अधीन आवेदन फाइल किया है/किये है। आपको यह कारण बताने के लिए कि क्यों न आवेदक द्वारा मांगे गये (अनुतोषो) को आपके विरूद्ध प्रदान कर दिया जाय व्यक्तिगत रूप से या सम्यक रूप से प्राधिकृत काउन्सेल के मार्पत तारीख 05 मास 05 सन् 2025 को बजे पूर्वान्ह/अपरान्ह में इस न्यायालय के समक्ष हाजिर होने का निर्देश दिया जाता है। इसमे असफल होने पर न्यायालय एक पक्षीय कार्यवाही करेगा। मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा के अधीन तारीख को दी गयी।

द0 हाकिम

बढ़ते तापमान व लू के चलते स्कूलों के समय परिवर्तन की मांग

संवाददाता–बलरामपुर। जिले में भीषण गर्मी व हीटवेव को देखते हुए शिक्षक संगठनों ने बेसिक शिक्षाधिकारी से मुलाकात कर स्कूल के समय में परिवर्तन करने की मांग की है। शिक्षक संगठनों ने ज्ञापन देकर छात्रों व अभिभावकों सहित शिक्षकों के हित में विद्यालय के समय में परिवर्तन की पहल को जरूरी बताया है। विशिष्ट बीटीसी शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन जिला इकाई के अध्यक्ष धर्मेंद्र शुक्ल एवं मंत्री तुलाराम गिरी की अगुवाई में बेसिक शिक्षाधिकारी को ज्ञापन देकर स्कूल में समय परिवर्तन की मांग की गई है। अध्यक्ष ने बीएसए से अनुरोध किया है कि भीषण गर्मी व बढ़ते तापमान के चलते स्थिति काफी विपरीत हो गई है। बच्चों के सुरक्षा की दृष्टि से विद्यालय समय परिवर्तन किया जाना जरूरी है। इसको लेकर शिक्षक संघ ने बीएसए को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान निर्मल द्विवेदी, डॉ उत्तमचंद गुप्ता, विनोद चौहान, शिवाकांत त्रिपाठी, शंकर शुक्ल, अंशुमन शुक्ल, नितिन कुमार व आसिफ आदि लोगशामिल रहे। इसी क्रम में प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष ज्ञान सागर पाठक व संयुक्त मंत्री शिव कुमार सोनी की अगुवाई में शिक्षक प्रतिनिधि मंडल बेसिक शिक्षाधिकारी से मिलकर परिषदीय विद्यालयों के समय परिवर्तन की मांग की। बीएसए से अनुरोध किया है कि बढ़ती गर्मी एवं तापमान के साथ–साथ हीटवेव की स्थिति में बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से विद्यालयों का समय परिवर्तन किया जाना जरूरी है। इस दौरान आलोक मणि पांडेय, वेद प्रकाश पांडेय, वैभव शुक्ल आदि संघ पदाधिकारी शामिल रहे।

आग से दो लोगों के घर जलकर राख

संवाददाता–श्रावस्ती। कोतवाली भिनगा क्षेत्र के ग्राम पंचायत रामपुर देवमन के मजरा छोटकईडीह में मंगलवार दोपहर में अज्ञात कारण से बुद्धि सागर पुत्र बच्चे लाल के फूस के घर में आग लग गई। देखते ही देखते घर धूं धूं कर जलने लगा। अग्निकांड की घटना देख ग्रामीण मौके पर एकत्र होकर आग बुझाने की कोशिश करने लगे। लेकिन तब तक आग ने बगल के ही राम उग्गर पुत्र खुशीराम के घर को भी अपनी चपेट में ले लिया। ग्रामीणों ने फायर विभाग व डायल 112 पुलिस को सूचित किया। मौके पर पहुंची पुलिस व दमकल कर्मियों की टीम ने ग्रामीणों के साथ मिलकर आग पर काबू पाया। लेकिन तब तक दोनों घर के साथ घर में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया।

देल्ही पब्लिक स्कूल के छात्रों ने जेईई मेंस परीक्षा में लहराया परचम

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। देल्ही स्कूल ऑफ एक्सीलेंस हवेली खास के बच्चों ने एक बार फिर विद्यालय का नाम रोशन किया। जेईई मेन्स का रिजल्ट आने के बाद बच्चों ने अपनी कामयाबी का लोहा मनवाया।

जेईई मेन्स के दूसरे अटेम्प्ट में फिर वैभव वर्मा ने 98.3 परसेंटाइल, हर्षित राज ने 96 परसेंटाइल, रजत पटेल ने 94 परसेंटाइल, शहजाद खान ने 94 परसेंटाइल, अनूप चौधरी ने 93 परसेंटाइल,हुजैफा ने 93 परसेंटाइल, दिलबाग खान ने 91.4 परसेंटाइल, यश प्रताप सिंह ने 92 परसेंटाइल, शिखर चौधरी ने 91 परसेंटाइल, मानसी पाल ने 90.8 परसेंटाइल, देवेश प्रजापति ने 89 परसेंटाइल, अमन यादव ने 88.3 परसेंटाइल, कोमल पटवा ने 88 परसेंटाइल, आयुष मिश्रा ने 87 परसेंटाइल लाकर अपने विद्यालय के अध्यापकों सहित अपने माता–पिता का नाम रोशन कर दिया। विद्यालय प्रबंधक जेपी सिंह ने विद्यालय के प्रधानाचार्य गोपाल त्रिपाठी सहित उनके अध्यापको अनूप पांडेय , प्रशांत त्रिपाठी, राजेश टांडी, प्रमोद गुप्ता, इंद्र मिश्रा, आशुतोष पाल, लकी शुक्ला, अजय शर्मा, ऐश्वर्या सिंह को एवं सभी बच्चों को मिठाई खिलाकर बधाई दी। इंचार्ज वेद प्रकाश सिंह, वंदना पांडे, भूपेंद्र त्रिपाठी, हर्षिता पांडे, दिव्या त्रिपाठी, रेनू पांडे, अवनीश पाठक, दिनेश यादव, लक्ष्मीकांत सहित सभी अध्यापकों ने बच्चों की इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

महिला यू-ट्यूबर के दोस्त की हत्या का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता–गोरखपुर। सहजनवा में महिला यू–ट्यूबर के दोस्त की हत्या के मामले में मंगलवार की सुबह फरार चल रहा मुख्य आरोपी राम सिंह गिरफ्तार हो गया। पुलिस उससे पूछताछ में जुटी है। वहीं, पांचवे आरोपी राम सिंह की तलाश अभी जारी है। इसके पहले सोमवार को तीन आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था।

सोमवार को पुलिस ऑफिस में घटना का पर्दाफाश करते हुए एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर ने बताया कि मुख्य आरोपी राम सिंह और शिवा की तलाश में पुलिस दबिश दे रही है। पकड़े गए तीन आरोपियों में हिमांशु सिंह की भूमिका अहम है। 17 अप्रैल को पान की दुकान पर प्रदीप से कहासुनी होने पर राम सिंह ने हिमांशु को कॉल कर कहा था कि उसका बवाल हो गया है, कुछ लड़कों को लेकर आ जाए।

महुली में आई बारात में स्नो स्प्रे डालने को लेकर जमकर मारपीट

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के महुली कस्बा में सोमवार को स्नो स्प्रे डालने की बात को लेकर घराती और बाराती पक्ष में जमकर मारपीट हुई। जिसका एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस दौरान कुछ लोग लाठी से स्कूटी को क्षतिग्रस्त करते हुए वीडियो में दिख रहे हैं। हिन्दुस्तान समाचार पत्र इसकी पुष्टि नहीं करता है। एक मिनट 12 सेकेंड की वायरल वीडियो में महुली कस्बा में आई बारात में मजाक–मजाक में स्नो स्प्रे डालने को लेकर घराती और बाराती पक्ष में शामिल युवाओं के बीच पहले बहसबाजी शुरू हुई। इसके बाद दोनों पक्षों में मारपीट होने लगी।

आवश्यक सूचना

आप सभी को अवगत कर रहा हूँ कि प्रस्तावित मत्स्य जीवी सहकारी समिति लि० माधवपुर वि०ख० कुदरहा के नाम से समिति का गठन किया जाना है। जिसका कार्य कार्य क्षेत्र न्याय पंचायत जगन्नाथपुर होगा। जगन्नाथपुर न्याय पंचायत के विभिन्न ग्रामों के मछुआ समुदाय तथा अनुसूचित जाति के इच्छुक व्यक्ति सदस्य के रूप में समिति से जुड़ना चाहते हो, वह ग्राम पंचायत माधवपुर में स्थित पंचायत भवन पर अपना आवेदन पत्र 23–04–25 से दिनांक 29–4–25 दोपहर 12.00 बजे तक प्रस्तुत कर सकते है।

संरक्षक
लालमन निषाद पुत्र मूरत
ग्राम– अकेला कुबेरपुर
विकास खण्ड – कुदरहा
तहसील बस्ती जनपद – बस्ती
मो0न०–7379411577

आवश्यक सूचना

आप सभी को अवगत कराया जाता है कि प्रस्तावित मत्स्य जीवी सहकारी समिति लि. फुलवरिया निषाद के नाम से समिति का गठन किया जाना है। जिसका कार्य क्षेत्र न्याय पंचायत नगर है।

अतः जो भी मछुआ समुदाय तथा अनुसूचित जाति के व्यक्ति सदस्य के रूप में समिति में जुड़ना चाहते है वे सभी लोग ग्राम – फुलवरिया निषाद में स्थित प्रदीप निषाद कैम्प कार्यालय पर अपना आवेदन पत्र 23–04–25 से दिनांक 29–4–25 दोपहर 12.00 बजे तक प्रस्तुत कर सकते है।

संरक्षक
(राम विवेक निषाद)
पुत्र चिन्ताहरण
ग्राम– फूलवरिया निषाद
तहसील बस्ती सदर
जनपद बस्ती।
मो०नं0 7408043176

बेदखली सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थी अशफाक अहमद पुत्र स्वर्गीय नसीर अहमद ग्राम व पोस्ट खुर्दा थाना–पैकोलिया जनपद बस्ती (उ.प्र.) का निवासी है। मेरा सगा पुत्र इस्तियाक अहमद परिवार के कहने, सुनने में नहीं है और आये दिन कलह किया करता है। उसकी बुरी आदतों से परेशान होकर मैने उससे दिनांक 17–4–2025 से अपना सम्बन्ध समाप्त करते हुये चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। अपने किसी भी कृत्य, लेन देन आदि के लिये वह स्वंय जिम्मेदार होगा। प्रकाशन इसलिये करा रहा हूं कि वक्त जरूरत पर काम आवे।

कार्यालय ग्राम पंचायत-तुरकौलिया बरगाह वि0ख0 बनकटी जनपद- बस्ती

अल्पकालिक निविदा सूचना

वित्तीय वर्ष 2025–26 में 15 वां केन्द्रीय वित्त आयोग/राज्य वित्त आयोग/अंत्येष्टि स्थल/स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) योजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालय/ पंचायत भवन/मनरेगा पार्क एवं अन्य सार्वजनिक भवनों के अनुरक्षण, सुन्दरीकरण एवं अवस्थापना सुविधाओं के विकास हेतु निम्नलिखित निर्माण सामग्रियों को क्रय करने हेतु अल्पकालीन निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 25–04 2025 से 30–04–2025 तक कार्यालय कार्य दिवस में अपरान्ह 12.00 बजे तक प्रधान ग्राम पंचायत के कार्यालय पर सील बंद निविदा प्राप्त कर जमा कर सकते है। दिनांक 30–04–2025 को निविदा हेतु गठित कमेटी या निर्माण समिति के सदस्यों के समक्ष अपरान्ह 02.00 बजे खोली जायेगी, निविदा फर्म पैड पर होगी।

क्र.सं.	परियोजना का नाम	मात्रा (प्राक्कलन के अनुसार	शिड्यूल रेट के अनुसार (निम्नतम दर पर
1	टाइल्स, शुलभ/सामुदायिक शौचालय		
2	सीमेन्ट, बालू, गिट्टी, छड़		
3	ईट, हैण्डपम्प रिबोर, हरा चारा, सूखा चारा, चुन्नी सीमेंटेड ईट		
4	पलम्बरी सामग्री, खेल कूद के मैदान पर खेल कूद की सामग्री		
5	समर्सिबल, विद्युत तार, जलसंचयन सम्बन्धी कार्य		
6	इण्टरलाकिंग टाइल्स सामग्री गोवंश आश्रय केन्द्र पर भूसा अन्य		
7	डेस्क, बेंच फर्नीचर/आलमारी		
8	ग्रीन बोर्ड पर्दा, अन्त्येष्टी स्थल, सूखा–गीला कचरा प्रबंधन व कम्पोस्ट गड्ढा इत्यादि		
9	भूसा, वृक्षारोपण (पौधा कम से कम 6 फीट का होना चाहिए)		
10	कंस्ट्रक्शन ज्वाइंट, आंगनबाड़ी केन्द्र		
11	नाली निर्माण सामग्री, पंचायत भवन		
12	खड़ंजा, सोख्ता, सोलर लाईट, स्ट्रीट लाईट		
13	योगा/व्यायाम सामग्री, मॉडर्न वृक्षारोपण, ह्यूम पाईप, सी.सी. टीवी कैमरा ए.सी.पी. बोर्ड, दिशा सूचक/साईन बोर्ड/शिलापट्ट या फैन्सग्रास		
14	पंचायत भवन निर्माण/मरम्मत, आपरेशन कायाकल्प, फागिंग मशीन, लाल ईंट आदि।		

प्रतिबंध एवं शर्ते– सभी कार्य योजना के अनुसार एवं प्राथमिकता के आधार पर कराये जायेंगे। समाग्री की मात्रा स्वीकृत होने के पश्चात तय की जायेगी। आवश्यकता के अनुसार सामग्री की आपूर्ति ग्राम प्रधान एवं ग्राम पंचायत सचिव के आदेश पर की जायेगी अथवा नही। आपूर्तिकर्ता वाणिज्यकर एवं आयकर कार्यालय में पंजीकरण अनिवार्य है। प्रस्तुत दर पी.डब्लू.डी. की दर से अधिक न हो। सामग्री आपूर्तिकर्ता द्वारा रू0–50 के स्टाम्प पेपर पर भरना अनिवार्य होगा। सामग्री आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। आपूर्तिकर्ता को 4 प्रतिशत वाणिज्यकर एवं 2.24 प्रतिशत आयकर में कटौती के पश्चात ही भुगतान किया जायेगा। निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार निविदा समिति/निर्माण समिति में निहित होगा।

(सुनील) ग्राम प्रधान   **(बाल्मीकि)** ग्रा0पं0/ग्रा0वि0अधि0

पत्रांक मेमो /22.04.2025 वित्तीय वर्ष 2025–26

67 करोड़ गलत भुगतान में आयकर–जीएसटी चोरी का भी संदेह

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। जिले में हुए धान–गेहूं खरीद में 67 करोड़ रुपये का घोटाला में अब नया मामला सामने आया है। इसमें आयकर व जीएसटी चोरी का भी संदेह जताया जा रहा है। विभागीय टीम अब इसकी जांच कर रही है कि पीसीएफ के तत्कालीन जिम्मेदारों ने धान–गेहूं खरीद में 67 करोड़ रुपये का भुगतान करने से पहले आयकर व जीएसटी की कटौती की है या नहीं। कहीं आयकर व जीएसटी की चोरी भी तो नहीं की गई है।

दरअसल सिद्धार्थनगर जिले में वित्तीय वर्ष 2023–24 में हुए धान खरीद में पीसीएफ के 37 केंद्रों पर गड़बड़झाला पकड़ में आया था। प्रशासन की जांच में पता चला कि जिले में धान खरीद के लिए पीसीएफ के 60 केंद्र बने थे। इसमें से पीसीएफ के 37 केंद्रों पर गड़बड़ी हुई है। जांच में पता चला है कि 6372 एमटी धान क्रय केंद्रों से मिलरों तक पहुंचा ही नहीं है। इसमें जानबूझ कर 11 करोड़ रुपये की शासकीय क्षति की गई है। इस मामले में पीसीएफ के तत्कालीन जिला प्रबंधक अमित कुमार चौधरी व एकाउंटेंट उमानंद उपाध्याय पर सिद्धार्थनगर थाने में गबन का केस दर्ज हुआ। वहीं छह केंद्र प्रभारियों पर बांसी, खेसरहा, त्रिलोकपुर व चिल्हिया थाने में केस दर्ज हुआ। वहीं पीसीएफ के दोनों कर्मियों ने दर्ज केस का साक्ष्य मिटाने के लिए पीसीएफ कार्यालय में कूट रचित तरीके से चेक वितरण रजिस्टर चोरी कर लिया। रजिस्टर चोरी होने के बाद किए गए भुगतान आदि की जानकारी के लिए पीसीएफ के गेहूं व धान परचेज खातों की जांच हुई तो 67 करोड़ का घोटाला सामने आ गया। विभागीय टीम अब इस बात की जांच कर रही है कि पीसीएफ के तत्कालीन जिम्मेदारों ने धान–गेहूं खरीद में 67 करोड़ रुपये का भुगतान करने से पहले आयकर व जीएसटी की कटौती की है या नहीं। दरअसल किसी भी बिल का भुगतान करने से पहले कुल एमाउंट में से आयकर व जीएसटी की कटौती करने के बाद शेष धनराशि का भुगतान किया जाता है। विभाग को धान–खरीद घोटाले में आयकर– जीएसटी चोरी करने का भी संदेह है। विभागीय टीम इसकी भी गहनता से जांच कर रही है। विजय प्रताप पाल, जिला प्रबंधक, पीसीएफ ने कहा कि धान–गेहूं खरीद में 67 करोड़ रुपये का गलत भुगतान के मामले में आयकर व जीएसटी की कटौती हुई है या नहीं इसकी भी जांच चल रही है। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे उसी के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी।

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान एकादश अति0 सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0–797/2004
राज कुमार
बनाम
रामवहोर आदि
1. श्रीमती मोना विधवा पत्नी नरेन्द्र 2. कुमारी हर्षिता पुत्री नरेन्द्र 3. आदित्य नावालिग द्वारा संरक्षिका श्रीमती मोना प्राकृतिक मां पुत्र नरेन्द्र निवासीगण मझौवा खजुरी तप्पा पड़िया परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला–बस्ती

तारीख पेशी 12–05–2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 12 माह 05 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय–श्रीमान अति0 जिला जज पास्को एक्ट महोदय बस्ती जिला–बस्ती
सिविल अपील सं0–40/2024
परमात्मा प्रसाद आदि
बनाम
अशोक कुमार श्रीवास्तव (मृतक) आदि
1/1 संदीप कुमार श्रीवास्तव पुत्र स्व0 अशोक कुमार श्रीवास्तव 1/2 प्रदीप कुमार श्रीवास्तव पुत्र स्व0 अशोक कुमार श्रीवास्तव निवासी ग्राम सिंगही पो0 मनऊवा तप्पा कनैला परगना नगर पूरव तहसील व जिला बस्ती –रेस्पान्डेन्ट्स प्रथम वर्ग 2. श्रीमती इन्द्रावती देवी पत्नी श्री ज्ञानेन्द्र चौधरी एडवोकेट निवासीगण ग्राम बरईजोत तप्पा बस्ती पूरव परगना नगर पूरव तहसील व जिला बस्ती –रेस्पान्डेन्ट्स द्वितीय वर्ग

तारीख पेशी 09–05–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 09 माह 05 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान नवम् अति0 सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0–261/2014
कमरूद्दीन
बनाम
अकबर अली आदि
13/1/1 श्रीमती हसीदुननिशा पत्नी यूनुस साकिन बैरागल तप्पा ऊजी परगना नगर पश्चिम तहसील हर्रैया जिला–बस्ती 12/1 फिरोज अहमद 12/2 परवेज अहमद 12/3 इमरान 12/4 शाबान 12/5 सलमान पुत्रगण स्व0 रफीउल्लाह 12/6 श्रीमती नाजमा खातून विधवा रफीउल्लाह साकिनान बैरागल तप्पा ऊजी परगना नगर पश्चिम तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 12–05–2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 12 माह 05 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान एकादश अति0 सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0–220/2010
हरिनाथ आदि
बनाम
राजेश आदि
2/1 शेषधर उम्र लगभग 55 वर्ष 2/2 कमलेश कुमार उम्र लगभग 42 वर्ष 2/3 सुनील कुमार उम्र लगभग 39 वर्ष पुत्रगण स्व0रामअजोर निवासीगण ग्राम उमरिया तप्पा ऊजी परगना नगर पूरव तहसील हर्रैया जिला–बस्ती पिनकोड नं0–272131

तारीख पेशी 15–05–2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 15 माह 05 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0–93/2024
राजेश कुमार सिंह
बनाम
गरीब आदि
1/1 रामस्वारथ 1/2 बहरैची पुत्रगण स्व0 गरीब साकिनान मौजा रामगढ़ खास तप्पा रामगढ़ परगना अमोढ़ तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 28–04–2025

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 28 माह 04 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा।

बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0–174/2024
अली अहमद
बनाम
श्रीमती अफसर जहॉ
1. श्रीमती अफसर जहॉ उम्र लगभग 65 साल पत्नी स्व. वशीर अहमद साकिन माली टोला तप्पा हवेल परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला–बस्त तथाकथित हाल मुकाम पिकौरा दत्तूराय तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव पोस्ट गांधीनगर बस्ती तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 14–07–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 14 माह 07 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
–द0 हाकिम

बनकटी नगर पंचायत में विश्व पृथ्वी दिवस पर दिया संदेश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। नगर पंचायत बनकटी में विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर स्वच्छ वातावरण प्रोत्साहन समिति के सदस्यों के साथ संगोष्ठी करते हुए पौधारोपण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए नगर पंचायत बनकटी अधिशासी अधिकारी ने पौधा रोपण कर पर्यावरण बचाने का संकल्प दिलाया। इस मौके पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बनकटी एवं सार्वजनिक स्थलों पर साफ सफाई किया गया।

इस दौरान आशीष श्रीवास्तव बनकटी बाबू, आशीष श्रीवास्तव,प्रवेश कुमार दुबे,दीपिका वर्मा, राधे श्याम गुप्ता,विशुन देव, भगवानदीन, दीन दयाल,सफीक,देवेंद्र पांडेय, रामचंद्र पांडेय आदि लोग उपस्थित रहे।

तिरपाल काटकर बीयर की बोतल चुरा ले गए चोर

संवाददाता–गोरखपुर। खोराबार पुलिस ने अमरोहा के आदमपुर थाना क्षेत्र के ग्राम सभा सहबाजपुर निवासी राजू पुरी पुत्र विरेन्द्र पुरी की तहरीर पर तिरपाल काटकर गाड़ी से बीयर चोरी करने के मामले में केस दर्ज कर विवेचना कर रही है। राजू पुरी ने खोराबार पुलिस को तहरीर देकर बताया है कि 19 अप्रैल को शाम करीब 6:30 बजे छह टायरा गाड़ी नम्बर यूपी 14 क्यूटी 9234 से मानव ब्रेवरीज प्राइवेट लिमिटेड गाजियाबाद से 700 पेटी बीयर लादकर गोरखपुर के खोराबार थाना क्षेत्र स्थित रीना केडिया के गोदाम के लिए निकला और रास्ते में गाड़ी रोककर नास्ता किया।

अदालती नोटिस

इश्तहार मजरिया अदालत– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0 08/2024
निर्मला देवी–सायलान
1. निर्मला देवी उम्र 70 साल पत्नी अखिलेश कुमार मिश्रा 2. अखिलेश कुमार मिश्रा उम्र 71 साल पुत्र रामयज्ञ मिश्रा 3. राहुल कुमार उम्र 41 साल पुत्र अखिलेश कुमार मिश्रा 4. पियंका कृष्णशंकर तिवारी पुत्री अखिलेश कुमार मिश्रा 5. आख्या मिश्रा उम्र 36 साल पुत्री अखिलेश कुमार मिश्रा साकिनान ग्राम चौकड़ी तप्पा रामगढ़ परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला–बस्ती

तारीख पेशी 17–05–2025

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा–372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम–1925
दरख्वास्त मुसम्मा
वास्ते हुसूल सर्टीफिकेट वसूल कर्जा व विकालत हाय दरख्वास्त मुसम्मा मुतवफ्फा अपने बमूजिब एक्ट 7 सन 1889 ई0 वकैद

हरगाह मुसम्मा ने दरख्वास्त हुसूल सर्टीफिकेट गुजरानी है और तारीख माह सन ई0 वास्ते समाअत दरख्वास्त के मुकर्रर हुई है। लिहाजा यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि किसी को निस्बत के उज्र हो या असालतन या वकालतन वक्त 10 बजे सुबह अदालत सिविल जज (जू0डि0) बस्ती बतारीख पेशी 17–05–2025 मुकर्रर हाजिर होकर उज्र अपना पेश करें। दरसूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का सुना न जायेगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।

अलमरकूम माह सन 20 ई0।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0–898/2023
महावीर वर्मा
बनाम
राज वर्मा आदि
1. राज वर्मा अवयस्क पुत्र मुन्नालाल ववलायत पिता खुद मुन्नालाल वर्मा उम्र 16 वर्ष 2. मुन्नालाल वर्मा पुत्र छोटेलाल वर्मा उम्र 40 वर्ष 3. मिठाइलाल वर्मा उम्र 50 वर्ष 4. रामू वर्मा उम्र 35 वर्ष पुत्रगण छोटेलाल वर्मा निवासीगण ग्राम ओड़वारा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 11–07–2025

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 11 माह 07 सन 2025 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
–द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्ररह समायत अपील
वाद सं0–
अदालत– श्रीमान डी0डी0सी0 महोदय बस्ती जिला–बस्ती
रामदास
बनाम
जगलाल आदि
1. जगलाल 2. बरौनी 3. जंगबहादुर पुत्रगण पल्टू 4. श्रीमती समलावती पत्नी बेनबहादुर 5. दीपू 6. अभिषेक पुत्रगण बेनबहादुर निवासीगण ग्राम मुनियांव तप्पा उमरा परगना बस्ती पूरव तहसील भानपुर जिला–बस्ती

तारीख पेशी 30–04–2025

अपील बनराजी अदालत मुकाम मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्ट

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 30 महीना 04 सन 2025 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है।

अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी।

आज बतारीख 22 माह 04 सन 2025 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।
द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेल bhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com